जनवरी माह में पशुधन सम्बन्धित कार्य

- खुर–मुहँ रोग के बचाव का टीका लगावायें।
- पेट में कीड़ों की दवाई नियमित दें।
- बछडों को बैल बनाने के लिए 6 माह की आयु के बाद बधिया करवायें।
- दुधारु पशु का थनैला रोग से बचाव के उपाय करें।
- पशुओं को साफ व ताजा पानी पिलायें।
- पशुओं का बिछावन समय–2 पर बदलते रहें।
- पशु को ठंड लगने पर नजदीक के पशुचिकित्सक से सलाह लें।
- अधिक बरसीम खिलाने से पशु को अफारा हो सकता है, अफारा होने पर 500 ग्राम सरसों के तेल में 60 ग्राम तारपीन का तेल मिला कर दें।
- पशु के सम्पूर्ण विकास के लिए खनिज मिश्रण 50–60 ग्राम प्रतिदिन दें।

फरवरी माह में पशुधन सम्बन्धित कार्य

- पशुशाला व पशुओं की सफाई नियमित करें।
- गाय व भैंस के ताव में आने पर उत्तम नस्ल के साँड व झोटे से समय पर गाभिन करवाएँ।
- गाय व भैंस के दो से तीन माह की गाभिन होने पर पशु–चिकित्सक से गर्भ का परीक्षण (चैक) अवश्य करवाएँ।
- ब्याँने वाले पशुओं का विशेष ध्यान रखते हुए अन्य पशुओं से अलग रखें।
- नवजात बछडे–बछड़ियों व कटडे–कटिड़ियों को अन्तः परजीवी नाशक दवाई पशुचिकित्सक की सलाह अनुसार नियमित दें।
- दुधारु पशुओं को थनैला रोग से बचाने के लिए दूध पूरा व मुट्ठी बांध (फुल मिल्किंग) कर निकाले।
- बरसीम फसल की आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- बरसीम व जई फसल की सही अवस्था पर चारे के लिए कटाई करते रहें।

मार्च माह में पशुधन सम्बन्धित कार्य

- ब्याँने वाले पशुओं को प्रसूति बुखार से बचाने के लिए खनिज मिश्रण 50–60 ग्राम प्रतिदिन दें।
- पशु बयाँने के 1–2 घन्टे के अन्दर नवजात बछडों–बछडियों को खीस अवश्य पिलायें।
- नवजात बछडों–बछडियों को 10–15 दिन की आयु पर सींग रहित करवायें।
- पशुओं को बाह्य परजीविओं से बचाने के लिए पशुचिकित्सक की सलाह अनुसार उपयुक्त दवाई का छिड़काव नियमित करें।
- पशुओं को संक्रामक रोगों के रोगरोधी टीके समय–2 पर अवश्य लगवाएं।
- बरसीम फसल की सिंचाई अधिक गर्मी होने पर सायं काल में करें।
- हरे चारे की फसल से अधिक उत्पादन लेने के लिए उन्नत किस्म के बीज का प्रयोग करें।
- खरीफ में हरा चारा लेने के लिए ज्वार एवम् मक्का की बिजाई करें।

अप्रैल माह में पशुधन सम्बन्धित कार्य

- गाय व भैंस के ताव में आने पर समय से गाभिन करवायें।
- पशुओं को बरसीम अधिक खिलाने से आफारा हो जाये तो पशु को 50 से 100 मि. लि. तारपीन के तेल में आधा किलो सरसों का तेल मिला कर दें।
- पशु को तेज धूप से बचायें।
- पशुओं को मुहँ–खुर रोग का टीका यदि नहीं लगवाया तो अवश्य लगवायें।
- दूध का अधिक मूल्य लेने के लिए दुग्ध पदार्थ बना कर बेचें।
- गेहूँ के भूसे की पौषकत्ता बढ़ाने के लिए यूरिया से उपचारित करें।
- पशु की अच्छी सेहत तथा दूध बढ़ाने के लिए 50–60 ग्राम खनिज मिश्रण अवश्य दें।
- गर्मियों में हरा चारा लेने के लिए गेहूँ की कटाई के बाद ज्वार और मक्का व लोबिया की बिजाई करें।
- भेड़ बकरियों को अन्तः परजीवी नाशक दवाई पशुचिकित्सक की सलाह अनुसार समय–2 पर दें।

मई माह में पशुधन सम्बन्धित कार्य

- गाय व भैंस से अच्छी नस्ल के बच्चे लेने के लिए उन्हें अच्छी नस्ल के सांड से गाभिन करवायें।
- पशुओं को गलघोटू रोग से बचाव का टीका लगवायें।
- पशुओं को सन्तुलित आहार दें जिससे उनकी दुग्ध उत्पादन क्षमता बनी रहे।
- चिचिड़यों व पेट के कीडों से बचाव का उचित प्रबन्ध करें।
- दुधारु पशुओं का थैनेला रोग से बचाव करें।
- चारे की फसल से अच्छी पैदावार लेने के लिए कृषि विशेषज्ञ की सलाह अनुसार उन्नत किस्म के बीज का प्रबन्ध करें।
- गर्मियों में हरे चारे के लिए ज्वार, मक्का व लोबिया की बिजाई करें।
- पशुओं का लू से बचाव करें।
- बछड़े को बैल बनाने के लिए छः मास की आयु पर बधिया करवायें।

जून माह में पशुधन सम्बन्धित कार्य

- पशुओं को ब्लैक–क्वार्टर रोग से बचाव का टीका अवश्य लगवायें।

- पशुओं को 50–60 ग्राम खनिज मिश्रण व 20 ग्राम नमक रोजाना दें।

- पशुओं को गलघोटू रोग का टीका यदि नहीं लगवाया तो अवश्य लगवायें।

- पशुओं को पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार पेट के कीड़ों की दवाई समय–2 पर देते रहें।

- गर्मियों के मौसम में पैदा की गई ज्वार में जहरीला पदार्थ हो सकता है, जो पशुओं के लिए हानिकारक है। अप्रैल में बिजाई की गई ज्वार के खिलाने से पहले 2–3 बार पानी अवश्य दें।

- बरसात के मौसम में चारे की अच्छी पैदावार लेने के लिए ज्वार व मक्का की बिजाई करें।

जुलाई माह में पशुधन सम्बन्धित कार्य

- माह के मध्य तक भैसों का ब्यांत शुरू हो जाता है, ब्यानें वाले पशु का विशेष ध्यान रखें।
- गाय व भैंस का बच्चा पैदा होते ही बच्चे की नाल को 1.5 से 2.0 इंच पर धागे से बांध कर नये ब्लेड से काट कर टिंचर आयोडीन लगायें।
- पशु ब्यांने के दो घण्टे तक बच्चों को खीस अवश्य पिलायें।
- अधिक दूध देने वाले पशुओं के ब्यांने के 7–8 दिन तक दुग्ध ज्वर (मिल्क फीवर) होने की सम्भांवना अधिक होती है, इसलिए पशु को कैलशियम फासफोरस का घोल 70 से 100 ग्राम प्रतिदिन पिलायें, तथा 8–10 दिन तक पूरा दूध न निकालें।
- पशुओं के पेट के कीड़ों की रोकथाम करने के लिए बच्चा पैदा होने के 7 दिन, 25 दिन, 3 माह और 6 माह के अन्तराल पर कीड़े नाशक दवाई की खुराक पशु चिकित्सक की सलाह के अनुसार दें और इस के बाद प्रत्येक 4 माह के अन्तराल पर अवश्य देते रहें।
- चारे के लिए मक्का की दूसरी फसल बोने का उचित समय है, बीज मात्रा 30 किलोग्राम प्रति एकड़ प्रयोग करें।
- चारे के लिए ज्वार की उत्तम किस्में पी. सी.–9, एच.सी.–171 व एस.एल.–44 की बिजाई माह के मध्य तक पूरी कर लें। बीज मात्रा 20–25 किलोग्राम प्रति एकड़ प्रयोग करें।
- सन्तुलित पशु–चारे के लिए मक्का, ज्वार, बाजरे को लोबिया व ग्वार के साथ मिला कर बिजाई करें। पशुओं को सन्तुलित चारा खिलाने से पशु के शरीर का समय पर विकास और दुग्ध उत्पादन में वृद्धि होती है।

अगस्त माह में पशुधन सम्बन्धित कार्य

- वर्षा ऋतु में पशुओं में गलघोटू, ब्लैक–क्वाटर जैसे छूत के रोग अधिक फैलते हैं यदि इन रोगों के प्रतिरोधक टीके नहीं लगवाये तो अवश्य लगवा लें।
- बरसात के मौसम में पशु घरों को सूखा रखें एवम् मक्खी रहित करने के लिए फिनाईल का छिड़काव करते रहे।
- पशुओं को खनिज मिश्रण 50 ग्राम से 60 ग्राम प्रतिदिन दें जिसे पशु की दुग्ध और शारीरिक क्षमता बनी रहें।
- पशुओं को जुएँ व चिचड़ से बचाव के लिए समय–2 पर पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार जुएँ व चिचड़ नाशक दवाई का छिड़काव नियमित करें।
- पशुओं को तलाब का गन्दा पानी न पिलायें।
- चारे की फसल से अधिक उत्पादन लेने के लिए उचित समय पर सिंचाई करें।
- मक्का बिजाई से 40–50 दिन और ज्वार 50 से 60 दिन बाद पशुओं को खिलाने पर भरपूर मात्रा में पौष्टिक तत्व मिलते है।
- अक्तूबर माह में हरे चारे की कमी को पूरा करने के लिए अगस्त माह के तीसरे व चौथे फखवाड़े में मक्का व ज्वार की बिजाई करें।

सितम्बर माह में पशुधन सम्बन्धित कार्य

- गाय व भैंस को ताव में आने के 12 से 18 घन्टे के अन्दर गाभिन करवाने का उचित समय है।
- दुधारु पशुओं में थैनेला रोग से बचाव के उपाय करें।
- पशुओं को अन्तः परजीवी नाशक दवाई पशु–चिकित्सक की सलाह अनुसार नियमित दें।
- बरसीम की बिजाई इस माह के अन्तिम सप्ताह शुरू करें।
- बरसीम की पहली काट से अधिक चारा लेने के लिए सरसों की (चाइनीज कैबिज) किस्म या जई मिलाकर बिजाई करें।
- बरसीम के साथ राई घास मिला कर बिजाई करने से हरे चारे की पौषक्ता व उपज में वृद्धि होती है।
- बरसीम फसल से अधिक उपज व लम्बी अवधि (मध्य जून) तक हरा चारा प्राप्त करने के लिए उन्नत किस्में BL-10, BL-22 व BL-42 की बिजाई करें।
- बरसीम की बिजाई नये खेत में करनी हो तो बीज को राईजोबियम कल्चर से उपचारित करने पर अधिक हरा चारा प्राप्त किया जा सकता है।
- बैल बनाने के लिए छः मास की आयु होने पर बछड़े को बधिया करवायें।

अक्तूबर माह में पशुधन सम्बन्धित कार्य

- इस माह से सर्दी का मौसम शुरू हो जाता है, अतः पशुओं का सर्दी से बचाव का उचित प्रबन्ध करें।
- सर्दी के मौसम में अधिकतर भैंस ताव में आती है, अतः भैंस के ताव में आने पर समय से गाभिन करवायें।
- भैंस को मुर्राह नस्ल के झोटे से या नजदीक के कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र से ही गाभिन करवायें।
- भैंस ब्यांने के 60–70 दिनों तक ताव में नहीं आये तो नदजीक के पशु–चिकित्सक से जाँच करवायें।
- भैंस व गाय को समय से ताव में लाने के लिए खनिज मिश्रण अवश्य खिलायें।
- पशुओं को बाह्यय परजीवी से बचाव के लिए पशु–चिकित्सक की सलाह से दवाई का छिड़काव नियमत करें।
- अधिक चारा लेने के लिए बरसीम फसल की उन्नत किस्में BL-10, BL-22 व BL-42 की बिजाई इस माह अवश्य कर लें।
- जई फसल से अधिक चारा लेने के लिए उन्नत किस्में OS-6, OL-9 या कैन्ट की बिजाई माह के मध्य से शुरू करें।

नवम्बर माह में पशुधन सम्बन्धित कार्य

- पशुओं को खुर–मुहँ बिमारी के बचाव का टीका लगवायें।
- थैनेला रोग से बचाव के उपाय करें।
- सर्दी के मौसम में भैंस अधिकतर ताव में आती है अतः भैंस को समय से मुराह नस्ल के झोटे से गाभिन करवायें।
- पशुओं को सर्दी से बचाने के लिए पशु घर का उचित प्रबन्ध करें।
- पशुओं का बिछावन सूखा होना चाहिए तथा प्रतिदिन बदल देना चाहिए।
- पशुओं को खनिज मिश्रण अवश्य खिलाएं।
- जई फसल की बिजाई इस माह पूरी कर लें।
- बरसीम फसल की सिंचाई 15–20 दिन के अन्तराल पर करते रहें।
- लूर्सन की बिजाई माह के मध्य तक अवश्य पूरी कर लें।

दिसम्बर माह में पशुधन सम्बन्धित कार्य

- पशुओं को अन्तः कृमिनाशक दवाई पशु चिकित्सक की सलाह से समय–समय पर पिलायें।
- पशुओं को संतुलित आहार के साथ–साथ खनिज मिश्रण प्रतिदिन खिलायें।
- बरसीम अधिक खिलाने से पशुओं को अफारा हो सकता है, अफारे से बचाव के लिए बरसीम के साथ सूखा चारा मिला कर खिलायें।
- पशुओं को सर्दी से बचाव का उचित प्रबन्ध करें।
- पशुओं को खुरपका–मुहँपका रोग से बचाव का टीका लगवायें।
- दुधारु पशुओं को थैनेला रोग से बचाने के लिए पूरा दूध निकाले और दूध दोहन के बाद थनों को कीटाणु नाशक घोल में डुबोयें।
- बरसीम फसल को सर्दियों में 15 से 20 दिनों के अन्तर पर पानी अवश्य लगायें।
- जई फसल में पहला पानी 21–25 दिनों पर लगायें।